नन्हें-मुन्नों की जिंदगी और हमारा नजरिया

गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

जब भी पहला शिशु घर में जन्म लेता है उसी समय से वह सबका राजदुलारा बन जाता है। घर का वातावरण भी बदल जाता है। उसी समय से दादा, दादी अर्थात जो भी बड़े बुजुर्ग कायम होते हैं वे उस बच्चे की जिन्दगी को सँवारने में प्रयासरत हो जाते हैं। हर परिवार में, ज्यादातर जिसे अनुभव होता है या बच्चों में लगाव होता है उसी की बात पर सभी अमल करते हैं।

जैसा हम सभी जानते हैं बाल्यावस्था में बालक तो अबोध होते हैं इसलिये आप का दायित्व है कि उसका उचित लालन पालन करें क्योंकि हर बालक को हंसी खुशी, सुख सुविधाओं के साथ जीने का अधिकार है जिससे शिशु को वंचित नहीं रखा जाना चाहिये। यहां उचित लालन पालन से मतलब है शुरू से ही खेल कूद के अलावा धार्मिकता में भी उसका रूझान रहे। ऐसी ब्यवस्था अपनायें ताकि शुरू से ही वह ग़लत सही को समझने लग जाय।

यह भी आपका दायित्व है कि वह आपसे आपकी पारिवारिक / क्षेत्रीय भाषा में बात करे जिससे परिवार के प्रति लगाव बढ़ता रहे।

उसे अच्छे संस्कार सिखाने वाली पाठशाला में दाखिला दिलायें ताकि अच्छी पढ़ाई के साथ चरित्रवान बने।

उसकी रूचि जानने की हमेशा कोशिश करते रहें ताकि उसी अनुसार आप उसकी सही व्यवस्था कर पायें अर्थात अपनी रूचि उस पर न थोप, उसी की रूचि अनुरूप आप उसे वह सब सुविधा उपलब्ध करायें ताकि वह सफलता की सीढ़ी पर चढ़ता रहे। अन्यथा ये बच्चे आपको उसी प्रकार का उलाहना देंगे जैसा हाल ही में एक कृति नाम की बच्ची ने अपने आत्महत्या के समय लिखे पत्र में सम्बोधित करते हुये अपनी मां के लिए लिखा- "आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फायदा उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रहीं। मैं भी विज्ञान पढ़ती रही ताकि आपको खुश रख सकूं। मैं क्वांटम फिजिक्स और एस्ट्रोफिजिक्स जैसे विषयों को पसंद करने लगी और उसमें ही बीएससी करना चाहती थी लेकिन मैं आपको बता दूं कि मुझे आज भी अंग्रेजी साहित्य और इतिहास बहुत अच्छा लगता है क्योंकि ये मुझे मेरे अंधकार के वक्त में मुझे बाहर निकालते हैं।"

साथ ही उसे स्वस्थ रहने के लिये योग के साथ साथ शारीरिक खेल कूद की तरफ रूझान हो जाय - इसकी भी जिम्मेदारी हम अर्थात उस पर ध्यान देनेवाले ठीक ढंग से शुरू से ही निभा लें तो उचित रहता है। शुरू से ही ऐसी प्रक्रिया अपनायें ताकि ज्यादा से ज्यादा भाषा लिखना, पढ़ना व समझने की ओर वह प्रेरित हो जिससे आगे जाकर वह कहीं भी निडरता से ज़िन्दगी बिता पाये।

हां, यह आवश्यक है कि हम हमेशा इस बात का ध्यान रखें ताकि बच्चों को उपलब्ध करायी गयी सुख सुविधाएं ही उनकी प्रगति और तरक्की के मार्ग में बाधक न बननी शुरू हो जाये।

अपने बच्चों की असफलता को उनकी कमजोरी मत बनने देवें बल्कि अपना दायित्व समझ बच्चों को ऐसा आत्मविश्वासी बना दें ताकि वे पूरे जोश और विश्वास के साथ जिंदगी में हर प्रकार की चुनौतियों का डट कर मुकाबला कर पायें।

उपरोक्त वर्णित मुख्य मुख्य बातों का सार यही है कि यदि हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा देश का एक जिम्मेदार नागरिक बनें, सुशील, संस्कारी, स्वाभिमानी व सभ्य बनें तो सबसे पहले हमें हमारा अपना व्यवहार को सभ्य एवं संतुलित बना एक आदर्श प्रस्तुत करना होगा। जैसा आप सभी मानेंगे परोपकार घर से ही शुरू होता है वाली कहावत अनुसार हमें अपना आचरण, व्यवहार परिलक्षित कराना होगा। जिससे बच्चा स्वयं सीखे और उसे यह हमेशा भय रहे कि किसी भी प्रकार की अन्यथा हमारे घरवाले बर्दाश्त नहीं करेंगे तभी वह अन्यथा वाले आचरण, व्यवहार से बचेगा। और यदि ऐसा आप कर पाने में सफल हो पाते हैं तो निश्चय मानिये आपका बच्चा न केवल नाम ,यश कमायेगा बल्कि आर्थिक रूप से भी सम्पन्न हो पाने में कामयाब हो जायेगा। इस तरह की कामयाबी से उसका नाम तो उज्ज्वल होगा ही साथ ही साथ जानकार लोग आपके पालन–पोषण की भी तारीफ अवश्य करेंगे और आपको भी इन सबसे संतोष होगा, सुख, शांति, चैन मिलेगा।